पर्यावरण चेतना में यज्ञ की उपादेयता

डॉ0 लज्जा पन्त (भट्ट)*

सारांश

पर्यावरण के संरक्षण तथा संवर्धन में यज्ञ का महत्त्वपूर्ण योगदान है। अन्न तथा अन्नाद का सम्बन्ध ही यज्ञ है। यही क्रम जब 'यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्मके रूप में प्रतिपादित होता है तो देवता के उद्देश्य से हवनीय पदार्थ शुद्ध घृत सुगन्धित, वायुशोधक पदार्थों की अग्नि में आहुति दी जाती है, उसे हम यज्ञ कहते हैं। वैदिक यज्ञ व्यवस्था पूर्ण रूप से वैज्ञानिक है। आज वायु मण्डल में कार्बनडाई आक्साइड की मात्रा निरन्तर वृद्धि को प्राप्त होती दिखाई दे रही है। इस कारण पर्यावरण प्रदूषण के साथ पारिस्थितिकी असन्तुलन बढ़ता जा रहा है। यज्ञ से पर्यावरण शुद्ध होता है। पूर्व में मुनि लोग नित्य यज्ञ (अग्निहोत्र) करते थे। फलतः हमारा वायुमण्डल पूर्णरूपेण शुद्ध था। हवनीय पदार्थों के कारण वायु शुद्ध होकर रोगनाशक होती है। हरिद्वार के शान्तिकुञ्ज में स्थित ब्रह्मवर्चस् शोध संस्थान में एक यन्त्र है जो निर्देश करता है कि यज्ञ के माध्यम से कितनी दूर तक वायुमण्डल स्वच्छ होता है। अथर्ववेद तथा यजुर्वेद के अध्ययन से ज्ञात होता है कि हवन करने से चारों दिशाओं में स्थित सभी जीव–जन्तुओं का सब प्रकार से कल्याण होता है। पर्यावरण की शुद्धता का परिपोषक, समस्त जगत् के कल्याण में तत्पर यज्ञ की प्रासङ्गिकता जितनी प्राचीन समय में थी उतनी ही उपादेय वर्तमान में भी है। अतः हम वैदिक ऋषियों के सिद्धान्तों को मानकर यदि पुनः प्रकृति की ओर लौट चलें तो अवश्य ही कल्याण होगा तथा मानवजाति की रक्षा हो सकेगी।

मुख्य शब्द – पर्यावरण, संरक्षण, संवर्धन, यज्ञ, अग्निहोत्र, आहुति, याज्ञिक प्रक्रिया, अथर्ववेद, यजुर्वेद ।

प्रस्तावना

पर्यावरण के संरक्षण तथा संवर्धन में यज्ञ का महत्त्वपूर्ण योगदान है। अन्न तथा अन्नाद का सम्बन्ध ही यज्ञ है। यही क्रम जब 'यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म [(1)] के रूप में प्रतिपादित होता है तो देवता के उद्देश्य से हवनीय पदार्थ शुद्ध घृत सुगन्धित, वायुशोधक पदार्थों की अग्नि में आहुति दी जाती है, उसे हम यज्ञ कहते हैं। यज्ञ से वातावरण शुद्धि के साथ वैचारिक शुद्धि भी होती है। यज्ञ का फल तो चतुर्दिक होता है– ''यज्ञस्य दोहो विततः पुरुत्रा'' [(2)]

यज्ञ अर्थात् अग्निहोत्र औषधि का कार्य करता है– 'अग्निः कृणोतु भेषजम्'।[(3)] यास्क ने निरुक्त में 'ऋत' शब्द को यज्ञ के पर्याय रूप में स्वीकार किया है। जिस प्रकार सूर्य अपनी किरणों से जल को शोषित कर मेघ रूप में पृथ्वी पर बरसाता है। पुष्प, फल, शाकादि पृथ्वी के अन्तस्थल में अपनी आहुति देकर वृक्ष रूप में सहस्त्रों फलों को प्रदान करते हैं। इसी प्रकार याज्ञिक प्रक्रिया द्वारा सृष्टि प्रक्रिया सदैव चलती है। यहाँ give & take का सिद्धान्त प्रयुक्त होता है। श्रीमद्भगवद्गीता में भी कहा गया है–

सह यज्ञाः प्रजाः सृष्ट्वा पुरोवाच प्रजापतिः।
अनेन प्रसविष्यध्वमेष वोऽस्त्विष्टकामधुक्।।
देवान्भावयतानेन ते देवा भावयन्तु वः।
परस्परं भवयन्तः श्रेयः परमवाप्स्यथ।।
इष्टान्भोगान्हि वो देवा दास्यन्ते यज्ञभाविताः।
तैर्दत्तानप्रदायैभ्यो यो भुङ्क्तेस्तेन एव सः।। [(4)]

यज्ञों में अग्नि प्रज्ज्वलन से तात्पर्य है मनुष्य की सुषुप्त आत्मज्योति के जागरण से ही मनुष्य का सर्वाङ्गीण कल्याण सम्भव है। इसके अतिरिक्त यज्ञों के अन्त में 'स्वाहा' शब्द का उच्चारण किया जाता है। जिसका तात्पर्य है स्वार्थपरक भावना का पूर्ण रूप से परित्याग। यज्ञ त्याग भावना का उपदेश देते हैं। 'यज्' धातु देवपूजा, संगतिकरण तथा दानार्थक होती है।

वैदिक यज्ञ व्यवस्था पूर्ण रूप से वैज्ञानिक है। आज वायु मण्डल में कार्बनडाई आक्साइड की मात्रा निरन्तर वृद्धि

* सहा0–आचार्य, संस्कृत विभाग, डी0एस0बी0 परिसर, कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल

को प्राप्त होती दिखाई दे रही है। इस कारण पर्यावरण प्रदूषण के साथ पारिस्थितिकी असन्तुलन बढ़ता जा रहा है। यज्ञों में डाली गई आहुतियाँ कीटाणुओं को उसी प्रकार बहा ले जाती हैं जिस प्रकार नदी जल के साथ जल के झाग को–

इदं हविर्यातुधानानान् नदी फनमिवा वहत्।
य इदं स्त्री पुमानकः इह स स्तुवतां जनः।।[5]

यज्ञ से पर्यावरण शुद्ध होता है। पूर्व में मुनि लोग नित्य यज्ञ (अग्निहोत्र) करते थे। फलतः हमारा वायुमण्डल पूर्णरूपेण शुद्ध था। हवनीय पदार्थों के कारण वायु शुद्ध होकर रोगनाशक होती है। हरिद्वार के शान्तिकुञ्ज में स्थित ब्रह्मवर्चस् शोध संस्थान में एक यन्त्र है जो निर्देश करता है कि यज्ञ के माध्यम से कितनी दूर तक वायुमण्डल स्वच्छ होता है। अथर्ववेद तथा यजुर्वेद के अध्ययन से ज्ञात होता है कि हवन करने से चारों दिशाओं में स्थित सभी जीव–जन्तुओं का सब प्रकार से कल्याण होता है–

यज्ञस्य दोहो विततः पुरुषाः सो अष्टधा दिमन्वाततान्।
स यज्ञ धुक्ष्व महि मे प्रजायां रायस्पोषं विश्वमायुरशीय स्वाहा।।[6]

जटामाशी, गुग्गुल, गुर्जा, अगर, तगर, घृत, हरिद्रा, पिपली, चन्दन आदि वायुशोधक पदार्थ हैं जो वायुमण्डल को पवित्र करते हैं। वायुमण्डल के शुद्ध होने से शुद्ध वायु प्राप्त होती है। घातक कीटनाशक रहित पौंधे सभी प्राणियों का पोषण करते हैं–

'देवो वनस्पतिर्जुषतां हविर्होतर्यज' [7]

अग्नि गूढ़ स्थानों में छिपे हुए रोगों के कृमियों को निकाल कर उनका नाश करती है–

यत्रेषामग्ने जनिमानि वेत्थ, गुहा सतामत्रिणां जातवेदः।
तांस्त्वं ब्रह्मणा वावृधानो, जह्येषां शततर्हमग्नेः।।[8]

विष्णुपुराण में यज्ञ की महत्ता प्रदर्शित करते हुए यज्ञ को समस्त सृष्टि के मूल में विद्यमान बताया गया है–

देह्यनुज्ञा महाराज मा धर्मो यातु संक्षयम्।
हविषां परिणामोऽयं यतेतदखिलं जगत्।।[9]

यज्ञ से उत्पन्न धूम (धुआँ) रोगाणुरोधक होता है। यह रोग उत्पन्न करने वाले सूक्ष्म जीवाणुओं का उन्मूलन करता है। यही कारण है कि जिस घर में नित्य नियमानुसार यज्ञ किया जाता है वहाँ पीड़ा, रोग तथा विकार नष्ट हो जाते हैं। यज्ञ के कल्याणकारक रूप का वर्णन यजुर्वेद में किया गया है–

हविष्मतीरिमा आपो हविष्माँ आ विवासति।
हविष्मान्देवों अध्वरो हविष्माँ अस्तु सूर्यः।।[10]

यज्ञ के द्वारा मानसिक, बौद्धिक आदि रोगों का नाश होता है। यज्ञ में डाली गई हवि (आहुतियों) में वायुशोधन की क्षमता होती है। यद्यपि वनस्पतियों, वृक्षों द्वारा भी वायु की शुद्धि होती है तथापि वायु को शुद्ध तथा गुणकारी करने की जितनी शक्ति अग्नि में विद्यमान है उतनी किसी अन्य में नहीं। शुद्ध गाय के घी में केसर, कस्तूरी, गुग्गुल, कर्पूर आदि रोगनाशक जड़ी–बूटी का मिश्रण अग्नि में होम करने से वातावरण में उपस्थित प्रदूषणों का निस्तारण होता है। जल तथा वायु का भी शोधन होता है। अतः यज्ञ द्वारा पर्यावरण शुद्धि वेदों की अद्‌भुत उपलब्धि है।

घर में की गई यज्ञाहुति घर के अन्दर तथा समीपस्थ स्थान की वायु शुद्ध करती है तथा मन्दिरों, आश्रमों, सार्वजनिक स्थानों में किये गये यज्ञ विस्तृत स्थान की वायु को पवित्र कर गुणकारी तथा रोगमुक्त बनाते हैं। यज्ञ वर्षाकारक भी होते हैं। यज्ञ का पवित्र धूम भारहीन होने के कारण आकाश में जाकर वर्षा का कारण होता है–

अग्नौ प्रास्ताहुतिः सम्यगादित्यमुपसर्पति।
आदित्याज्जाते वृष्टिर्वष्टेरन्नं ततः प्रजाः।।
अन्नाद्‌भवन्ति भूतानि पर्जन्यादन्नसम्भवः।
यज्ञाद्‌भवति पर्जन्यो यज्ञः कर्मसमुद्‌भवः।।[11]

अथर्ववेद में भूमि को माता कहा गया है। हम भूमि को पोषक तत्त्व प्रदान करें, भूमि की हिंसा न करें अपितु रक्षा करें। पर्यावरण की दृष्टि से हमारे ऋषियों ने जो उदात्त संकल्पना की है, प्रकृति तथा पर्यावरण की दृष्टि से ऋषियों के चिन्तन की

उत्कृष्टता को प्रदर्शित करती है। तैत्तिरीय श्रुति के अनुसार ब्रह्माण्ड के पारिस्थितिकी चक्र में परमात्मा से आकाश उत्पन्न हुआ। आकाश से वायु, वायु से अग्नि, अग्नि से जल, जल से पृथ्वी आविर्भूत हुई। पृथ्वी से औषधियाँ प्रकट हुईं, औषधियों से अन्न तथा अन्न से पुरुष उत्पन्न हुआ। इस वृहत् प्रणाली में किसी एक भी कड़ी के प्रदूषित अथवा अव्यवस्थित होने पर समस्त प्रणाली प्रतिकूलतया प्रभावित हो जाती है। भोजन दुग्ध, जल, अन्नादि में प्रविष्ट होकर जो रोग, जन्तु हानि पहुँचाते हैं उन्हें यज्ञ द्वारा नष्ट कर दिया जाता है।[12] यज्ञ (अग्निहोत्र) अग्नि, जल, मिट्टी, वनस्पति आदि के प्रदूषण दूर करने में सहायक है। अग्नि वायु से दूषक तत्त्वों का उन्मूलन करता है। इससे स्पष्ट होता है कि हमारी वैदिक ज्ञान परम्परा में यज्ञ द्वारा किसी न किसी प्रकार से पर्यावरण चेतना को जागृत करने की अद्भुत क्षमता विद्यमान है।

'विष्णुपुराण' में यज्ञ के महात्म्य का वर्णन करते हुए ऋषि द्वारा कहा गया है– यह समस्त जगत् हवि का ही परिणाम है–

'हविषा परिणामोऽयं यतेतदाखिलं जगत्' [13]

अतः यज्ञ ही कल्याण का साधन है–

ततश्चाज्याहुतिद्वारा पोषितास्ते हविर्भुजः।
वृष्टेः कारणतां यान्ति भूतानां स्थितये पुनः।।[14]

यज्ञ द्वारा वैदिककाल से ही पर्यावरण सन्तुलन का निर्माण किया जाता रहा। आज भी यदि यज्ञ के महत्त्व को जानकर याज्ञिक वैदिक संस्कृति का अनुसरण कर कार्य सम्पादित किये जायें तो पारिस्थितिकीय असन्तुलन का निवारण हो सकता है। भैषज्य यज्ञों से तो अनेकानेक रोगों की चिकित्सा भी सम्भव है–

भैषज्ययज्ञा वा एते यत् चातुर्मास्यानि, तस्माद् ऋतुसन्धिषु प्रयुज्यन्ते।
ऋतुसन्धिषु वै व्याधिर्जायते।[15]

इस विषय में आचार्य कपिलदेव द्विवेदी जी का कथन है– ''विविध वैज्ञानिक अनुसन्धानों से यह सिद्ध हो चुका है कि अग्निहोत्र से जो वायु निकलती है, वह वातावरण को शुद्ध तथा प्रदूषणमुक्त करती है। अमेरिका स्थित न्यू जर्सी प्रान्त में अग्निहोत्र नाम एक संस्था है जो अमेरिका में प्रदूषण निवारण हेतु अग्निहोत्र का अत्यधिक परिमाण में प्रयोग तथा प्रचार करती है। यज्ञकार्य में मन्त्रों का सस्वर पाठ ध्वनि प्रदूषण की समस्या का उत्तम समाधान है। ऋतु परिवर्तन के समय प्रकृति में कतिपय दूषित तत्त्व उत्पन्न होते हैं जिनके कारण वायु–मण्डल प्रदूषित होता है तथा विविध रोग उत्पन्न होते हैं। वायु–प्रदूषण तथा विविध रोगों का निराकरण तथा समाधान गोपथ तथा कौषीतकि ब्राह्मण में वर्णित भैषज्य यज्ञों के द्वारा किया जा सकता है।(वेदों में विज्ञान– डॉ0 कपिल देव द्विवेदी)

अमेरिकी मनोवैज्ञानिक बेरी रैथनर (जो पुणे विश्वविद्यालय में यज्ञ पर शोधकार्य कर रहे थे) का कहना है कि अग्निहोत्र (यज्ञ) वायुमण्डल में एक विशिष्ट ढंग का प्रभाव उत्पन्न करता है तथा उसका मानव पर चिकित्सकीय प्रभाव पड़ता है। उस चिकित्सकीय प्रभाव की आयुर्वेद में स्पष्ट चर्चा है। प्राचीन काल में हमारे देश में जो सुख–सम्पन्नता थी, धरती सस्य श्यामला थी, आपदाओं का अभाव था इन सबके पीछे यज्ञीय प्रक्रियाओं का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है।

सम्भवतः जनसाधारण का यह मानना है कि यज्ञ में लकड़ी (समिधा) के जलने से कार्बनडाई आक्साइड पैदा होती है, किन्तु रसायन विज्ञान के माध्यम से यह बात सिद्ध होती है कि आम वस्तुओं को जलाने तथा यज्ञ के अनुष्ठान में काफी अन्तर है। यज्ञ में प्रयुक्त होने वाले गोघृत, चावल तथा मीठे पदार्थों में वीटा कैरोटिन तथा कार्बोहाइड्रेट होती हैं। जब हम उन्हें यज्ञ में जलाते हैं तो ये पदार्थ कार्बनडाई आक्साइड गैस में रूपान्तरित होकर नेसेन्ट हाइड्रोजन निकालते हैं तथा वह कार्बन तथा आक्सीजन के साथ फार्मेल्डिहाइड, इथाइल एल्कोहल तथा प्रोपिनाइक अम्ल बनाते हैं। ये तत्त्व हानिकारक नहीं हैं अपितु विसंक्रमणकारी हैं तथा वातावरण के प्रदूषण को नष्ट करते हैं।

यज्ञों द्वारा वातावरण को शुद्ध कर अनेक संक्रामक रोगों को भी फैलने से रोका जा सकता है। यज्ञ से पर्यावरणीय स्वास्थ्य बढ़ता है तथा मनुष्य, पशु तथा वनस्पति की साधारण विकास प्रक्रियाओं में सुधार तथा वृद्धि होती है। यज्ञ की राख का कई पौंधों पर प्रयोग करने पर पाया गया कि इससे फलों की मात्रा, स्वाद आदि में बढ़ोत्तरी होती है।

वेदों में केवल वाह्य जड़ प्रकृति का प्रदूषण ही नहीं अपितु शारीरिक एवं मानसिक प्रदूषण को रोकने की भी भावना व्यक्त की गई है। अथर्ववेद के एक मन्त्र में स्पष्ट कहा गया है कि हे मन के पाप! तू मुझसे दूर हट, तू मुझे असद् मार्ग पर क्यों ले जाता है। मैं तेरी कामना नहीं करता हूँ। इसी प्रकार का भाव यजुर्वेद के शिवसंकल्पसूक्त में मिलता है। वहाँ 'तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु' की उद्भावना की गई है।[16]

वैदिक ऋषियों ने पर्यावरण को समग्र दृष्टि से अभिन्न रूप में प्रतिपादित कर जीवन के साथ अनुस्यूत कर दिया था। प्रकृति तथा मानव जीवन का सामञ्जस्य एवं सन्तुलन ही पर्यावरण संरक्षण था। यज्ञ पर्यावरण के प्राण हैं। इससे भूतों, प्राणियों तथा समस्त विश्व की रक्षा होती है। कालिदास ने 'रघुवंश' महाकाव्य के पञ्चम सर्ग में 'यज्ञ' का वर्णन किया है। 'यज्ञ' में विश्व कल्याण की भावना सन्निहित होती है। 'यजमान' शिव की अष्टमूर्तियों में परिगणित किया जाता है।[17] वह उस समय सामान्य मानव न होकर शिवत्व रूप होता है।

वैदिक ऋषियों ने पर्यावरण संरक्षण के वाह्य तथा आभ्यन्तर दोनों ही पक्षों पर सूक्ष्म चिन्तन किया। आज मानव ने हमारे वैदिक ऋषियों के सिद्धान्तों का उल्लंघन कर प्रकृति के साथ सामञ्जस्य को समाप्त कर दिया है। सर्वत्र प्रकृति को अपने लाभ के लिए उजाड़ने में लगा है। सन्तुलन समाप्त होने से आज उसे सभी दिशाओं से सम्पूर्ण प्रकृति से भय है।

वायु, जल, भूमि, वनस्पति, वृक्ष, पशु, मानव अर्थात् पृथ्वी पर स्थित जैविक तथा अजैविक तत्त्व जिस पर्यावरण की संरचना करते हैं, उसे बनाए रखना आज परमावश्यक है। जीवन की गुणवत्ता पर्यावरण की गुणवत्ता पर निर्भर करती है। अतः स्वच्छ जल, स्वच्छ भोजन, निरापद वायु, स्वच्छ गृह तथा प्रदूषण रहित वातावरण एक अच्छे पर्यावरण के आवश्यक घटक हैं। जीवन के लिए मानसिक रूप से स्वस्थ होना तथा प्रकृति से विरासत में मिले हुए विविध पदार्थों का समुचित उपयोग करना नितान्त आवश्यक है।

यज्ञभूमि के वरण हेतु प्रयोग किये जाने वाले मन्त्र में भी पर्यावरण संरक्षण की भावना का संकेत दृग्गोचर होता है–

'येन यज्ञेनोत्तमैः पदार्थैः सह शोभना इयं पृथिवी भवति,
येन च कल्याणकारिभिर्गुणैरियं मङ्गलप्रदा भवति।'[18]

उक्त आधार पर हम कह सकते हैं कि पर्यावरण की शुद्धता का परिपोषक, समस्त जगत् के कल्याण में तत्पर यज्ञ की प्रासङ्गिकता जितनी प्राचीन समय में थी उतनी ही उपादेय वर्तमान में भी है। अतः हम वैदिक ऋषियों के सिद्धान्तों को मानकर यदि पुनः प्रकृति की ओर लौट चलें तो अवश्य ही कल्याण होगा तथा मानवजाति की रक्षा हो सकेगी।

सन्दर्भ

1. शतपथब्राह्मण
2. यजुर्वेद 8/62
3. अथर्ववेद 8/106/3
4. श्रीमद्भगवद्गीता 3/10–12
5. अथर्ववेद 1/81
6. यजुर्वेद 8/62
7. यजुर्वेद 21/46
8. अथर्ववेद 1/8/4
9. विष्णुपुराण 1/13/25
10. यजुर्वेद 6/23
11. श्रीमद्भगवद्गीता 3/14
12. शतपथब्राह्मण 8/7/2/21
13. विष्णुपुराण 2/7/11
14. विष्णुपुराण 2/8/106
15. गोपथब्राह्मण उ0 1/19
16. यजुर्वेद 34/1–6
17. अभिज्ञानशाकुन्तलम् 1/1
18. वाजसयेनी संहिता 1/27